1

Course – BA Education Hons, part III
paper – VI (Educational Guidance & Curriculum Construction
Topic – Concept of Counselling
prepared by – Dr. Sangeeta Kumari

इकाई 4 : परामर्श की अवधारणा
unit 4 : Concept of Counselling

4.1 परामर्श की अवधारणा (Concept of Counselling):–
व्यक्ति के समक्ष किसी-न-किसी प्रकार की समस्याओं का उत्पन्न होना स्वाभाविक है। समस्याओं का स्वरूप तथा उनकी गम्भीरता में भिन्नता हो सकती है, परन्तु प्रत्येक व्यक्ति समस्या-समाधान की प्रक्रिया के उपरान्त ही आगे बढ़ पाता है। निर्देशन से सम्बन्धित सेवाओं के अन्तर्गत परामर्श सेवा का सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्थान है। प्राचीन समय में परामर्श का कार्य अपेक्षाकृत सहज था तथा विद्यालय के शिक्षकों तथा समाज के अन्य व्यक्तियों के द्वारा परामर्श किया जाता था, परन्तु वर्तमान समय में समाज का स्वरूप अत्यन्त जटिल हो गया है। आज पग-पग पर व्यक्ति के समक्ष समस्याएँ हैं तथा इन समस्याओं का अध्ययन एवं समाधान भी एक जटिल कार्य है। अतः समस्याओं के स्वरूप के आधार पर परामर्श की प्रक्रिया भी परिवर्तित हो चुकी है। अब इस प्रक्रिया को सम्पन्न करने के लिए अधिक योग्य, कुशल एवं प्रशिक्षित विशेषज्ञों की आवश्यकता पड़ती है।

गिलबर्ट रेन के अनुसार,
"परामर्श सर्वप्रथम एक व्यक्तिगत सन्दर्भ का परिसूचक है। इसे सामूहिक रूप में प्रयुक्त किया जा सकता है। सामूहिक परामर्श जैसा शब्द असंगत है तथा व्यक्तिगत परामर्श जैसा शब्द भी संगत नहीं है, क्योंकि परामर्श

सदैव व्यक्तिगत रूप में ही सम्पन्न हो सकता है।"

"हम्फ्री एवं ट्रेक्सलर के अनुसार,

परामर्श व्यक्ति की समस्या समाधान हेतु विद्यालय या अन्य संस्थानों के कर्मचारियों का उत्सवों का प्रयोग है।"

स्ट्रैंग के अनुसार,

"परामर्श प्रक्रिया एक संयुक्त प्रयास है। विद्यार्थी का उत्तरदायित्व स्वयं को समझाने की चेष्टा करना तथा उस मार्ग का पता लगाना है जिस पर उसे जाना है तथा जैसे ही समस्या उत्पन्न हो, उसके समाधान के लिए आत्म विश्वास का विकास होना है। परामर्शदाता का उत्तरदायित्व इस प्रक्रिया में जब कभी छात्र को आवश्यकता हो, सहायता प्रदान करना है।"

इरिक्सन के अनुसार,

"एक परामर्श साक्षात्कार व्यक्ति से व्यक्ति का सम्बन्ध है जिसमें एक व्यक्ति अपनी समस्याओं तथा आवश्यकताओं के साथ, दूसरे व्यक्ति के पास सहायता हेतु जाता है।"

4.2 परामर्श की विशेषताएँ (Characteristics Of Counselling)

1. परामर्श वैयक्तिक सहायता प्रदान करने की प्रक्रिया है। इसे सामूहिक रूप से सम्पादित नहीं किया जाता है।
2. परामर्श में शिक्षण की भाँति निर्णय नहीं लिया जाता है, अपितु परामर्शप्रार्थी स्वयं निर्णय लेता है।
3. परामर्शदाता सम्पूर्ण परिस्थितियों के आधार पर समायोजन हेतु प्रार्थी को जानकारी देता है, और उसकी सहायता भी करता है।
4. परामर्शप्रार्थी अपनी समस्याओं का समाधान बिना किसी सुझाव व सहायता के स्वयं ही करने में समर्थ नहीं होता है। समस्याओं के समाधान हेतु वैज्ञानिक सुझाव

कहते हैं।

(5) परामर्श प्रार्थी को समझने में पर्याप्त सहायता देता है जिससे वह अपनी समस्याओं के समाधान के लिए निर्णय लेता है।

(6) परामर्श में एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की समस्याओं के समाधान हेतु सहायता इस प्रकार करता है जिससे स्वयं निर्णय लेकर सीखता है।

(7) परामर्श की प्रक्रिया निर्देशीय अधिक होती है। इसमें प्रार्थी के सम्बन्ध में संपूर्ण तथ्यों का संकलन करके सम्बन्धित अनुभवों पर बल दिया जाता है।

(8) परामर्श में प्रार्थी की समस्याओं का समाधान नहीं किया जाता है, अपितु इस प्रक्रिया से उसे स्वयं ही इस योग्य बना दिया जाता है कि वह अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं कर सके।

(9) परामर्श की प्रक्रिया प्रार्थी-केन्द्रित होती है जिसमें पारस्परिक विचार-विमर्श, वार्तालाप, तथा सौहार्दपूर्ण तर्क वितर्क के आधार पर प्रार्थी को इस योग्य बनाया जाता है कि वह अपनी समस्याओं के समाधान के लिए स्वयं निर्णय ले सके।

(10) परामर्श की प्रक्रिया में प्रार्थी का उत्तरदायित्व स्वयं को समझना तथा उस मार्ग को सुनिश्चित करना है जिस

(11) परामर्श प्रार्थी को सामाजिक उत्तरदायित्वों को सहर्ष स्वीकार करने में सहायता करना, उसे साहस देना जिससे उसमें हीन भावना न विकसित हो।

4.3 परामर्श की प्रक्रिया (Process of Counselling):—

परामर्श की प्रक्रिया एक विशिष्ट प्रक्रिया है और इस प्रक्रिया को सम्पन्न करने से पूर्व इसकी प्रक्रिया के प्रमुख अंगों का ज्ञान प्राप्त करना नितान्त आवश्यक है। कोई भी प्रक्रिया किसी न किसी दिशा में एक अथवा अनेक उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए सम्पन्न की जाती है। परामर्श का प्रमुख लक्ष्य विद्यार्थी, अथवा अन्य किसी सेवार्थी में आत्मबोध एवं सामंजस्य की योग्यता का विकास करना है।

4.4 परामर्श की प्रक्रिया के घटक :-

परामर्श की प्रक्रिया के तीन घटक हैं -

(i) परामर्श के लक्ष्य (Goals of Counselling)
(ii) सेवार्थी (client)
(iii) परामर्शदाता (Counsellor)

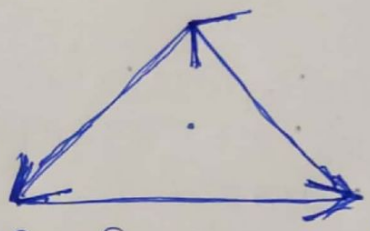

परामर्श की प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण घटक है - लक्ष्य को निर्धारित करना। इन लक्ष्यों को उपबोधक एवं कौशलों के वातावरण एवं समाज के अनुरूप ही निर्धारित किया जाता है अर्थात् उपबोधक एवं सेवार्थी को धार्मिक, राजनीतिक एवं सामाजिक वातावरण के मूल्य एवं आदर्श मान्य होंगे उन्हीं के अनुरूप लक्ष्यों को निर्धारित किया जाएगा। लक्ष्यों के निर्धारण में सेवार्थी की रुचियों, आवश्यकताओं एवं वातावरण को भी ध्यान में रखना पड़ता है।

4.5 अभ्यास के प्रश्न Questions for Exercise

Q1. Define Counselling. Describe the characteristics of Counselling.

परामर्श को परिभाषित कीजिए। परामर्श की विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

Scanned with CamScanner